‘महादेवी वर्मा के सौन्दर्यपूर्ण काव्यात्मक चित्रों का कलात्मक अध्ययन’

चित्रकला में पी.एच॰ डी॰ की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकत्री

अंजलि चौधरी

शोध निर्देशिका

डॉ॰ सोनिका

असिस्टेंट प्रोफेसर

ड्राइंग एण्ड पेटिंग विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा-282 005

2023

शोध संकल्पना

मानव मूलतः सौन्दर्य प्रेमी रहा है। वह अपने जीवन के हर क्षेत्र में हर पल सुन्दर वस्तुओं को देखना चाहता है। मानव की इस सौन्दर्य भावना से प्रेरित होकर ही कला का उद्भव हुआ। सत्य और सौन्दर्य की अभिव्यक्ति में कला का स्वरूप है। भारतीय कला भारतवर्ष के विचार, धर्म, दर्शन एवं तत्व - ज्ञान का दर्पण है। यहाँ का कण-कण छन्द, राग और रस से भरा हुआ है। तत्ववाद, कल्पनात्मक विस्तार और ऐतिहासिक परम्परा का प्रच्छन्न प्राधान्य भारतीय कला, साहित्य एवं संस्कृति में निहित है। कला का मूलाधार सौंदर्य की सृष्टि में परम सत्य की खोज करना है, जो मानव को सतत् आनन्द की ओर उन्मुख करती हुई परमानन्द का आत्मसाक्षात्कार कराती है।

कला और साहित्य अनेक प्रकार से एक साथ जुड़े हुए हैं। कला के महान कार्यो ने साहित्य के कार्यों को प्रेरित किया है और साहित्य के महान कार्यों ने कला को प्रेरित किया है। साथ में कला और साहित्य ने समान आंदोलन का प्रतिनिधित्व किया है। साहित्य सृजन भी एक कला है। कला को एक ''कलाकार और दर्शकों के बीच संचार'' रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

अतिप्राचीन काल से ही चित्रों के साथ लेखन की परम्परा देखने को मिलती है। चित्रकला के इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जहाँ चित्रों के साथ लेखन कार्य भी किया गया है। यह हमें गद्य व पद्य दोनों ही रूपों में प्राप्त होता है। प्राचीन भारत में काव्य लेखन एवं चित्रण की परम्परा ताड़पत्र, भोजपत्र एवं पाण्डुलिपियों पर दृष्टिगत होती थी, जिसके उदाहरण हम पाल, अपभ्रंष व जैन शैली में देख सकते हैं।

चित्रों के साथ लेखन की परम्परा लघुचित्रों में दृष्टिगत है। राजस्थानी चित्रों में राग-रागिनी आदि चित्रों के साथ तथा मुगल कालीन चित्रों में भी हमें यह परम्परा देखने को मिलती है। भारतीय चित्र शैली मे ं पोथी चित्रों की प्रथा रही है। मुगल शैली, राजस्थानी शैली एवं पहाड़ी शैली आदि पर आधारित जो पोथी चित्र एवं लघुचित्र बने वे सचित्र ग्रन्थों की परम्परा एवं विकास की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। भारत के अतिरिक्त अन्य देशों जैसे चीन व जापान में भी हमें चित्रण के साथ लेखन की परम्परा मिलती है। यहाँ के चित्रों की पृष्ठभूमि का आकाशीय भाग सुन्दर सुलिपि द्वारा कविताओं से भरा होता है।

जब भावधारा एक माध्यम से अभिव्यक्ति होने में असमर्थ होती है तो अन्य माध्यमों को सहज ही अपना लेती है। कवि और चित्रकार का यह समन्वित स्वरूप कलाओं के संबंध को और भी दृढ़ बना देता है। इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जो एक ही व्यक्ति में कवि और चित्रकार के गुण प्रस्तुत करते हैं। जिसमें सबसे परिचित हैं, नोबेल पुरस्कार विजेता

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगौर। जिनको लगभग सत्तर वर्ष की आयु में अपनी रचनाओं में दूसरे माध्यम से आनन्दानुभूति प्राप्त होने लगी और यकायक उनका मन तूलिका के प्रयोग में रम गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर की भाँति हिन्दी साहित्य की छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा भी मुख्यतः कवयित्री के रूप में जानी जाती हैं, किन्तु इस तथ्य से कम लोग ही अवगत हैं कि वह एक कुशल चित्रकार भी थीं। हिन्दी साहित्य को अधिक से अधिक गहरा और हरा-भरा बनाने में भारत के साहित्यकारों का अहम योगदान रहा है। तुलसीदास हों या सूरदास सबने हिन्दी के माध्यम से ही जनता को भक्ति के रंग में रंगा है। हिन्दी भाषा में मिलकर भक्ति का रंग भी कुछ ज्यादा निखर जाता है। हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों की श्रेणी में एक नाम ऐसा भी है, जिसे हम आधुनिक युग की मीरा के नाम से जानते हैं और वह हैं 'महादेवी वर्मा'।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च सन् 1907 ईसवी को फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ । उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः बाबा बाबू बांके बिहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी- महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल से प्रारंभ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही।

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों- जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'' और सुमित्रानन्दन पंत के साथ महत्वपूर्ण स्तंभ मानी जाती हैं। कभी कवि निराला ने उन्हें ''हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती'' कहकर संबोधित किया था जो उनकी महानता को दर्शाता है। महादेवी वर्मा हिन्दी के छायावादी कवियों की श्रृखंला में सबसे प्रतिष्ठित नामों में से एक हैं। महादेवी की रचनाओं का संसार बड़ा ही व्यापक है। कविताएँ उनकी लेखनी की प्रमुख विधा थी लेकिन इसके अलावा इन्होंने कई कहानियाँ, बाल साहित्य आदि भी लिखे। उन्हें चित्रकला में भी रूचि थी और उन्होंने अपनी कई रचनाओं के लिए चित्र बनाए हैं। उन्होंने उत्कृष्ट चित्रों की रचना की, उन्होंने अपने गीतों को ही कला की भाषा में नहीं उतारा बल्कि कविताओं के द्वारा जिन गूढ़ भावों को वह सुगमता से व्यक्त न कर सकी थीं, तूलिका के द्वारा उसको सम्भव बना दिया था।

महादेवी वर्मा द्वारा बनाए चित्र उनके काव्य संग्रहों दीपशिखा और यामा में छपे हुए हैं। **दीपशिखा** महादेवी वर्मा का पांचवां कविता संग्रह है। इसका प्रकाशन 1942 ई0 में हुआ इसमें 1936 ई0 से 1942 ई0 तक के गीत हैं। इस संग्रह में

147 पृष्ठ हैं और यह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया। इसमें कुल 51 कविताएं हैं प्रत्येक गीत अनूठा एवं चित्रात्मक है। **यामा** का प्रकाशन 1940 ई0 में हुआ यह लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया। यह एक काव्य संग्रह है इसमें उनके चार काव्य संग्रह हैं- नीहार, नीरजा, रश्मि और संध्यागीत संकलित किए गए हैं। यह उनका प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ है। इस कृति के लिए महादेवी जी को 1982 ई0 में हिंदी साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

महादेवी वर्मा ने अत्यन्त सुन्दर चित्रों का चित्रण किया। इनके द्वारा बनाए गए चित्रों के साथ जो कविताएँ लिखी हुयी हैं, वह उनके स्वयं के ही हस्त लेख में हैं। इनके चित्रों में कहीं-कहीं हमें एक रंग पद्धति देखने को मिलती है, जिस रंग का चित्र है उसी रंग से लेखन कार्य किया गया है। कहीं-कहीं रेखचित्र भी बनाए गए हैं। महादेवी वर्मा ने अपने द्वारा निर्मित रेखाचित्रों के विषय में विचार व्यक्त किया है -

''चित्रकार अपने सामने रखी वस्तु या व्यक्ति का रंगहीन चित्र जब कुछ रेखाओं में इस प्रकार आंक देता है कि उसकी विशेष मुद्रा पहचानी जा सके, तब उसे हम रेखाचित्र की संज्ञा देते हैं जो उस व्यक्ति या वस्तु का परिचय दे सके, परन्तु दोनों में अन्तर है। मेरे रेखाचित्र ऐसे क्षणों के प्रत्यावर्तन में लिखे गए हैं और प्रायः दीर्घकाल के उपरान्त भी लिखे गए हैं। एक प्रकार से मैं लिखने के लिए विषय नहीं खोजती हूँ, न कविता में न गद्य में। कोई विस्मृत क्षण अचेतन से चेतन में किसी छोटे से कारण से सम्पूर्ण तीव्रता के साथ जग जाता है, तभी लिखती हूँ।''

महादेवी वर्मा द्वारा बनाए गए चित्र सौन्दर्य से भरपूर हैं। उनके द्वारा निर्मित चित्रों को किसी भी प्रकार से कलाकारों द्वारा बनाए चित्रों से कम सिद्ध नहीं कर सकते। उनके चित्रों में कोमलता, लयात्मकता एवं गति प्रस्फुटित है। रंगों का सुन्दर संयोजन देखने को मिलता है। भोर के धुंधले बादलों में डूबी हुई क्षितिज-रेखा, नवोदित सूर्य की लालिमा, सुनहली किरणें चित्रित कर चित्र की रेखाएँ और रंग कितने स्पष्ट हो गये हैं। कहीं-कहीं प्रकृति में मानवीकृत रूप-चित्रण में भी ऐसी अद्‌भुत निपुणता दिखाई पड़ती है। इसके अतिरिक्त ऐसे उत्कृष्ट शब्द-चित्रों में कवयित्री का वर्ण-परिज्ञान भी उल्लेखनीय है। यह उनके चित्रकार होने की वजह से भी सुसाध्य हो गया है। मैं अपने शोध के अन्तर्गत 'महादेवी वर्मा के सौन्दर्यपूर्ण काव्यात्मक चित्रों का कलात्मक अध्ययन' विषय का चयन कर रही हूँ , जिसको मैं अपने शोध के द्वारा सबके समक्ष प्रस्तुत करूँगी तथा भावी पीढ़ी को भी अपने शोध द्वारा लाभान्वित करूँगी।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन, विषय के संबंध में वास्तविक तथ्य व जानकारी एकत्र करने में

सहायता प्रदान करता है। किसी भी शोधकार्य को आरम्भ करने से पूर्व उससे सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करना अनिवार्य है। मेरा शोध विषय 'महादेवी वर्मा के सौन्दर्यपूर्ण काव्यात्मक चित्रों का कलात्मक अध्ययन' है। सर्वप्रथम महादेवी वर्मा की साहित्य जगत में महान उपलब्धियों एवं सफलता के लिए उनसे सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन किया। अपने विषय से सम्बन्धित मैंने अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया, जिनसे मुझे शोध विषयक सामग्री एकत्रित करने में सहायता मिली। रमेशचन्द्र गुप्त द्वारा लिखित पुस्तक 'महादेवी का काव्य वैभव' और सुरेशचन्द्र गुप्त द्वारा लिखित पुस्तक 'महादेवी की काव्य साधना' से मैंने महादेवी वर्मा जी के काव्यात्मक जीवन की कला साधना की जानकारी प्राप्त की। डॉ॰ सूर्यप्रसाद दीक्षित की 'छायावादी कवियों का सौन्दर्य विधान' नामक पुस्तक से उनके छायावादी युग के साहित्य के क्षेत्र में योगदान को समझा। 'दीपशिखा' एवं 'यामा' का अध्ययन किया जिससे मुझे शोध विषयक सामग्री एकत्रित करने में सहायता मिली। इसके अतिरिक्त महादेवी वर्मा की 'स्मृति की रेखाएँ' शीर्षक पुस्तक का अध्ययन किया। 'मेरी प्रिय कविताएँ', 'पथ के साथी', 'संध्यागीत', 'जीवन स्मृतियाँ' आदि से उनकी कुछ कविताओं का अध्ययन किया। जिनमें से कुछ कविताओं पर आधारित महादेवी वर्मा ने अत्यन्त सुन्दर चित्रण किया है। इन पुस्तकों और स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर मैं 'महादेवी वर्मा के सौन्दर्यपूर्ण काव्यात्मक चित्रों का कलात्मक अध्ययन' का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करूँगी।

परिकल्पना

प्रत्येक अनुसंधान कार्य की सफलता व उसकी वस्तुनिष्ठता हेतु परिकल्पना की अत्यन्त आवश्यकता होती है, जिससे हम शोध के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से प्राप्त कर सकें व शोध विषय पर केन्द्रित रह सकें। कला और साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि कला में साहित्य एक अभिन्न अंग के समान है। दोनों को एक दूसरे का पूरक भी कहा जा सकता है। प्राचीन काल से ही साहित्य कला को प्रोत्साहित करता रहा है और कला भी साहित्य के लिए प्रेरक सिद्ध हुई है। समय-समय पर कविताओं और चित्रकला का सुन्दर सामन्जस्य देखने को मिलता है। जैसे काव्य में कवि अधिक से अधिक आंतरिक सौन्दर्य की सृष्टि करने का प्रयास करता है, उसी प्रकार चित्रों में बाह्य सौन्दर्य प्रकट करने का प्रयास किया जाता है। जब हम दोनों को एक साथ संयुक्त रूप से संयोजित करते हैं तो एक अद्भुत कलाकृति का निर्माण होता है। हिन्दी में रहस्य भावना संतकाल में ही अपना ली गई थी, परन्तु आधुनिक काल में रहस्यवाद शब्द का प्रयोग छायावाद के एक अंग के रूप में हुआ।

छायावाद के प्रमुख स्तम्भों में से एक हैं 'महादेवी वर्मा' जिन्हें साहित्य जगत में विशिष्ट ख्याति प्राप्त है। परन्तु एक

प्रसिद्ध कवयित्री के साथ-साथ वह एक कुशल चित्रकार भी थीं। पद्मभूषण, ज्ञानपीठ और पद्म विभूषण से सम्मानित महादेवी वर्मा ने साहित्य सेवा के साथ-साथ समाज सुधार के लिए भी कई महत्वपूर्ण कार्य किये। साहित्य के माध्यम से महादेवी ने स्त्री-सशक्तिकरण और स्त्री-शिक्षा जैसे अहम मुद्दों को प्रोत्साहित किया, तो समाज में चेतना जगाकर सामाजिक दायित्व निभाया। महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ एक कुशल चित्रकार भी थीं। इस प्रकार हम उन्हें बहुमुखी प्रतिभा की धनी कह सकते हैं।

महादेवी वर्मा के चित्रों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी लिपी और संयोजन से सम्बन्धित है। उनके प्रत्येक चित्र में हमें भिन्न ढंग से संयोजन देखने को मिलता है। चित्र के साथ मोती जैसे अक्षरों को संयोजित किया गया है। जिस रंग से चित्र बना है, उसी रंग से लेखन कार्य भी किया गया है। महादेवी वर्मा कला का लक्ष्य कला नहीं मानतीं। उनका मनना है कि कला और काव्य दोनों का ही लक्ष्य अखण्ड सत्य की प्राप्ति है। महादेवी वर्मा द्वारा चित्रित प्रत्येक चित्र का अपना अर्थ है।

"*कला के पारस का स्पर्श पा लेने वाले का कलाकार के अतिरिक्त कोई नाम नहीं* "- महादेवी वर्मा

इस शोध के माध्यम से मैं कवयित्री महादेवी वर्मा की चित्रात्मक अभिव्यक्ति का अध्ययन प्रस्तुत करूँगी तथा उनके जीवन की इस छुपी हुई कला को उजागर करने का पूर्णरूपेण प्रयास करूँगी। जिससे उनके साहित्य क्षेत्र की ख्याति के साथ-साथ उनके द्वारा निर्मित उत्कृष्ट कलाकृतियों पर प्रकाश डालने का प्रयास करूँगी।

उद्देश्य

एक शोधकर्ता को अपना शोध प्रारम्भ करने से पूर्व अपने निर्धारित उद्देश्य का सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिए कि वह किस उद्देश्य से शोध कर रहा है। किसी भी शोध का उद्देश्य एक महत्वपूर्ण तथ्य की खोज करना है। 'महादेवी वर्मा के सौन्दर्यपूर्ण काव्यात्मक चित्रों का कलात्मक अध्ययन' के विषय में शोध आरम्भ करने से पूर्व शोध के उद्देश्य स्पष्ट रूप से निर्धारित किये गये हैं, जिससे कि शोध विषय पर ही ध्यान पूर्ण रूप से केन्द्रित कर सकें। वर्णनात्मक अध्ययन हेतु प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार रहेंगे-

- चित्रकला एवं साहित्य के अन्तर्विषयक संबंध की व्याख्या करना।
- कवयित्री महादेवी वर्मा के जीवन एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालना।
- महादेवी वर्मा की साहित्य व कला साधना का अनुशीलन करना।

- काव्य संबंधी चित्रों का विषयात्मक अनुशीलन।
- महादेवी वर्मा के चित्रों का कलात्मक अध्ययन।

चर

- चित्रकला एवं साहित्य में महादेवी वर्मा के चित्रों से सम्बंधित सामग्री।
- कला के तत्व
- संयोजन के सिद्धान्त

कार्य प्रणाली

- **अनुसंधान अभिकल्प -** मैं अपना शोध ‘महादेवी वर्मा के सौन्दर्यपूर्ण काव्यात्मक चित्रों का कलात्मक अध्ययन’ प्रस्तुत कर रही हूँ। जिसके अन्तर्गत चित्रकला एवं साहित्य का महत्व बताते हुए महादेवी वर्मा के काव्ययुक्त चित्रों की विषय-वस्तु, तकनीक एवं कलात्मक विशेषताओं का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा। जिसके लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि को अपनाया जायेगा।
- **प्रदत्त संकलन -** तथ्यों का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित होगा।

➢ प्रथमिक स्त्रोत- छाया चित्र, संग्रहालय भ्रमण (इलाहबाद संग्रहालय), दीपशिखा, यामा, काव्य संग्रह, महादेवी वर्मा का आवास भ्रमण।

➢ द्वितीयक स्त्रोत- पुस्तकें, प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, इंटरनेट वेबसाइट्स आदि।

प्रतिदर्श आकार - मैं अपने शोध को पूर्ण करने के लिए महादेवी वर्मा की चित्राभिव्यक्ति वाले लगभग 100-120 चित्रों का चयन करूँगी।

सीमाएँ - प्रत्येक शोधकार्य की समय सीमा निर्धारित होती है जिसके आधार पर शोध कार्य पूर्ण किया जाता है। मेरा शोध कार्य सीमित अवधि में एकत्रित प्रदत्तों के आधार पर पूर्ण किया जाएगा। समय सीमा व शोध विषय की चयन प्रक्रिया को ध्यान में रखकर मैंने अपने शोध कार्य के लिए ‘महादेवी वर्मा के सौन्दर्यपूर्ण काव्यात्मक चित्रों का कलात्मक अध्ययन’ विषय का चयन किया है।

निष्कर्ष - इस शोध द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाएगा कि कवयित्री महादेवी वर्मा ने काव्य और चित्रों का

कितना अनोखा संगम प्रस्तुत किया है और अत्यन्त सुन्दर चित्रों का चित्रण किया है जो स्वयं में विशिष्ट है।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता

काव्य के साथ चित्रों का संयोजन न केवल वर्तमान में अपितु प्राचीन समय से देखा जा सकता है। हम चाहे शास्त्रीय ढंग से विचार करें या स्वतंत्र ढंग से, काव्य एवं चित्रकला में अभिव्यक्ति का ही अन्तर है, कला की आत्मा अर्थात् आनन्दानुभूति तो एक ही है। यदि काव्य एक बोलता हुआ चित्र है तो चित्र एक मूक काव्य। काव्य और चित्रकला का सम्बन्ध अक्षुण्ण है। इस शोध के द्वारा मैं यह सिद्ध करने का प्रयास करूँगी कि आधुनिक युग में 'कवयित्री महादेवी वर्मा' की चित्राभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक युग में भी काव्य के साथ चित्रों का संयोजन देखा जा सकता है। इस प्रकार यदि देखा जाए तो जहाँ एक ओर महादेवी के चित्रों की गोद में काव्य कला खेलती है, वहीं दूसरी ओर काव्य कला का साक्षात् रूप , रेखा और रंग के माध्यम से खिलता है।

महादेवी वर्मा के चित्रों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी लिपी और संयोजन है। इस क्षेत्र में उनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। उनके प्रत्येक चित्र में हमें भिन्न ढंग से संयोजन देखने को मिलता है। प्राचीन काल से ही चित्रों के साथ लेखन की परम्परा प्रचलित है। पाण्डुलिपि हों या लघु चित्र हमें इस प्रकार के संयोजन देखने को मिलते हैं।

वर्तमान युग में भी पुस्तकों में, पत्र-पत्रिकाओं में कविता के साथ चित्रों का चित्रण किया जाता है, जिससे वह और आकर्षक एवं प्रभावशाली बन जाती है। आधुनिक युग में भी कला और साहित्य का अन्तर्विषयक सम्बन्ध स्पष्ट है और यह आज भी सजीव एवं प्रासंगिक है।

कवयित्री महादेवी वर्मा की चित्राभिव्यक्ति का कलात्मक अध्ययन

विषय-अनुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय - चित्रकला एवं साहित्य का अंतर्सम्बन्ध

द्वितीय अध्याय - कवयित्री महादेवी वर्मा एक परिचय

2.1 महादेवी वर्मा का जीवन परिचय

2.2 महादेवी वर्मा की साहित्य व कला साधना

तृतीय अध्याय - काव्य संबंधी चित्रों का विषयात्मक अनुशीलन

3.1 **दीपशिखा काव्य संग्रह** - कविताओं से सम्बन्धित चित्रों की विषयात्मक व्याख्या

3.2 **यामा काव्य संग्रह** - कविताओं से सम्बन्धित चित्रों की विषयात्मक व्याख्या

3.3 अन्य चित्र

चतुर्थ अध्याय - महादेवी वर्मा की चित्राभिव्यक्ति का कलात्मक अध्ययन

4.1 काव्य के साथ चित्रों का भाव पक्ष

4.2 कविताओं से सम्बन्धित चित्रों का कला पक्ष

4.3 चित्रों की शैलीगत विशेषताएँ

उपसंहार

परिषिष्ट - सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography

Internet Website

चित्रसूची

अनुसंधान अभिकल्प -

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत चित्रकला एवं साहित्य का अन्तर्सम्बन्ध प्रस्तुत करूँगी।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत कवयित्री महादेवी वर्मा का जीवन परिचय एवं उनकी साहित्य व कला साधना का वर्णन प्रस्तुत करूँगी।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत उनके काव्य संबंधी चित्रों का विषयात्मक अनुशीलन करूँगी। जिसका आधार 'दीपशिखा' एवं 'यामा' की कविताओं से सम्बन्धित चित्रों के विषय रहेगा।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत महादेवी जी की चित्राभिव्यक्ति का कलात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी। जिसमें काव्य के साथ चित्रों के भाव पक्ष एवं कला पक्ष पर प्रकाष डालने का प्रयास करूँगी। साथ ही चित्रों की शैलीगत विशेषताएँ प्रस्तुत करूँगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गुप्त, रमेशचन्द्र - महादेवी का काव्य वैभव

गुप्त, सुरेशचन्द्र - महादेवी की काव्य साधना

थानी, योगराज - गद्य लेखिकाः महादेवी वर्मा

दिक्षित, सूर्यप्रसाद - छायावादी कवियों का सौन्दर्य विधान

वर्मा, महादेवी - मेरी प्रिय कविताएँ

वर्मा, महादेवी - पथ के साथी

वर्मा, महादेवी - दीपशिखा

वर्मा, महादेवी - यामा

वर्मा, महादेवी - संध्यागीत

वर्मा, महादेवी - जीवन स्मृतियाँ

त्रिपाठी, विष्वनाथ प्रसाद - महादेवी रचना संचयन

Bibliography

Kumar, Satendra – Art and Idea in English literature

Medrano, Aron – Exploring Art and Literature: Interpretation, Perspective and Influence

Robinson, W.Andrew – The art of Rabindranath Tagore

Roy, Supriya – Rabindranath Tagore: His World of Art

Sitzia, Emilie – Art in Literature,Literature in Art in 19th Century France

Internet Websites

https://www.jankipul.com/2013/04/blog-post_10-21.html

https://www.mjprustudypoint.com/2022/10/mahadevi-verma-ke-rekhachitra.html

https://www.meraranng.in/literature/mahadevi-verma-sketches/

https://www.scotbuzz.org/2017/05/mahadevi-varma-ka-jeevan-parichay.html?m=1

https://www.livehindustan.com/national/story-birth-anniversary-special-read-10-facts-about-poetess-mahadevi-verma-2461817.amp.html

https://www.hindi-kavita.com/HindiDeepshikhaMahadeviVerma.php

चित्र संख्या 1: महादेवी वर्मा जी चित्रण कार्य करते हुए
Source - https://twitter.com/IndiaHistorypic/status/1431350012726763523

चित्र संख्या 2: दीपक
Source - https://hinducosmos.tumblr.com/post/688762426351665152/deepshika-20th-century-artist-mahadevi-verma

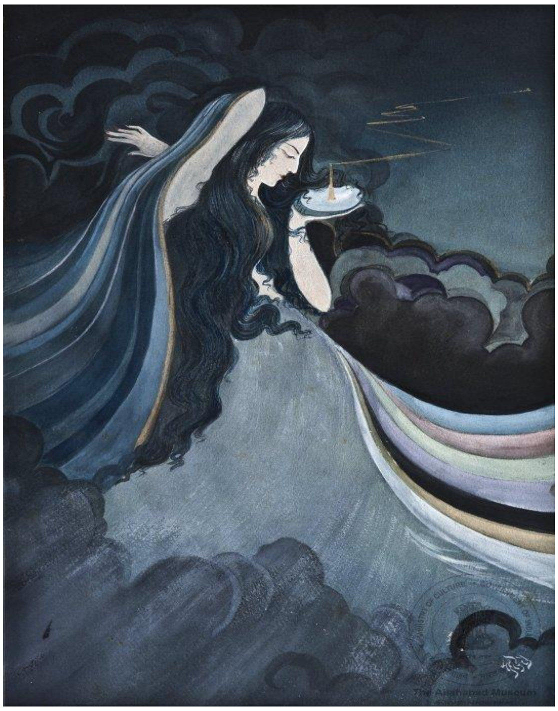

चित्र संख्या 3: वर्षा
Source - https://hinducosmos.tumblr.com/post/688762426351665152/deepshika-20th-century-artist-mahadevi-verma

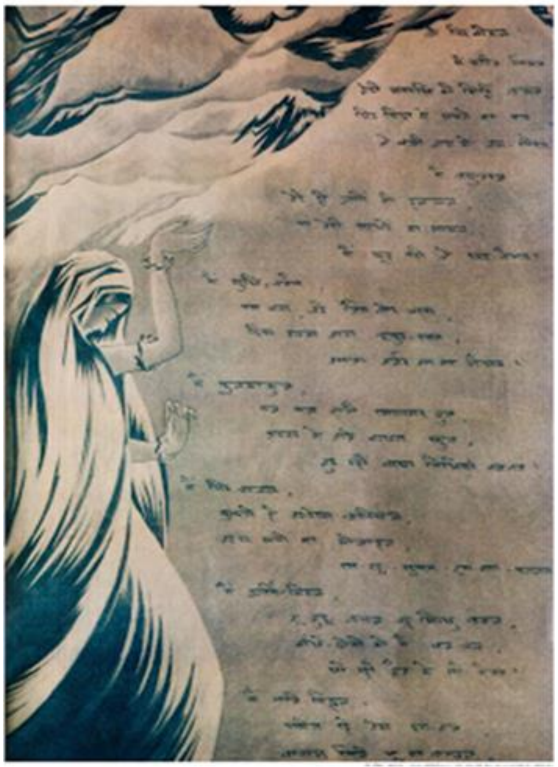

चित्र संख्या 4: ओ चिर महान
Source - https://twitter.com/kamlesm/status/1321748750591684614

चित्र संख्या 5: पुजारी
Source - https://twitter.com/kamlesm/status/1321753263918653440

चित्र संख्या 6: निशिथिनी
Source - https://twitter.com/kamlesm/status/1321745880345538560